18

पत्रकारिता का स्वरुप एवं महत्त्व

- डॉ. रेवा प्रसाद

प्रस्तावना :-

पत्रकारिता आधुनिक सभ्यता का एक प्रमुख व्यवसाय है जिसमें समाचारों की जानकारी एकत्रित करना, सम्पादित करना और सम्यक प्रस्तुतिकरण कर उपभोक्ताओं तक पहुँचाना आदि सम्मिलित है। पत्रकारिता का सीधा संबंध समाचार पत्र पत्रिकाओं से है। समाचार ऐसी सम-सामायिक घटनाओं, समस्याओं और विचारों पर आधारित है जिन्हें जानने की अधिक से अधिक लोगों में दिलचस्पी होती है और जिनका ज्यादा से ज्यादा लोगों के जीवन पर प्रभाव पड़ता हैं। समाचार जिस पत्र में प्रकाशित होते हैं, वह समाचार पत्र कहलाते हैं और जिस प्रक्रिया के माध्यम से समाचार लिखित रूप तक पहुंचते हैं, उसे पत्रकारिता कहते हैं।

पत्रकारिता का स्वरुप :-

पत्रकारिता के स्वरुप को समझने से पहले समाचार के अर्थ को जानना आवश्यक होगा। समाचार के लिए अंग्रेजी में 'न्यूज़' शब्द का प्रयोग किया जाता है, जो चार वर्णों के योग से बनता है। उतर, दक्षिण, पूर्व और पश्चिम। इस प्रकार न्यूज़ से तात्पर्य है- चारों दिशाओं से मिलने वाले समाचार। अंग्रेजी में पत्रकारिता के लिए 'जर्नलिज्म' शब्द का प्रयोग किया जाता है। 'जर्नलिज्म' शब्द की रचना 'जर्नल' से हुई है। 'जर्नल' का अर्थ है- दैनिक विवरण। हिंदी में 'जर्नल' के लिए 'पत्रिका' शब्द का प्रयोग किया जाता है। जिसे मैगजीन भी कहते हैं। सामाजिक दायित्व और जनहित से जुड़कर ही पत्रकारिता सार्थक बनती है। सामाजिक दायित्वों को व्यवस्था की दहलीज तक पहुंचाने और प्रशासन की जनहितकारी नीतियों तथा योजनाओं को समाज के सम्पूर्ण तबके तक ले जाने के दायित्व का निर्वाह ही सार्थक पत्रकारिता है। पत्रकारिता को लोकतंत्र का चौथा स्तम्भ भी कहा जाता है। जब पत्रकारिता अपने सामाजिक दायित्व के प्रति सार्थक भूमिका निभाती है तभी कोई लोकतंत्र सशक्त बनता है। सार्थक पत्रकारिता का उद्देश्य यह होना चाहिए कि वह प्रशासन और समाज के बीच एक महत्वपूर्ण कड़ी का कार्य करे।

यदि पत्रकारिता के इतिहास पर नज़र डालें तो भारत की स्वतंत्रता के पूर्व पत्रकारिता का मुख्य उद्देश्य स्वतंत्रता प्राप्त करना था। उस दौर में पत्रकारिता ने